

Panchadhyayi Uttararddh

| | |
|-------------|-------------------------|
| Folder No. | 022393 |
| Granth Name | Panchadhyayi Uttararddh |
| Author | Makkhanlal Shastri |
| Publisher | Granthprakash Karyalay |
| Edition | 1 |
| Year | 1918 |
| Pages | 338 |

पञ्चाध्यायी उत्तरार्द्ध

| | |
|--------------|-------------------------|
| फोल्डर नं. | ०२२३९३ |
| ग्रन्थ | पञ्चाध्यायी उत्तरार्द्ध |
| लेखक | मकखनलाल शास्त्री |
| प्रकाशक | ग्रन्थप्रकाश कार्यालय |
| आवृत्ति | १ |
| प्रकाशन वर्ष | १९१८ |
| पृष्ठ | ३३८ |

मुख्य टाइटल

भूमिका

विषय सूची

| | |
|---|-----|
| सामान्य विशेषका स्वरूप ----- | १ |
| क्रिया और भाव का लक्षण ----- | ११ |
| जीव और कर्मकी सत्ता----- | २१ |
| बंध के कारण पर विचार ----- | ३९ |
| जीव शुद्ध भी है और अशुद्ध भी है ----- | ४८ |
| ज्ञान चेतना का स्वामी ----- | ६४ |
| जानीका स्वरूप ----- | ७२ |
| क्षयोपशमका स्वरूप ----- | ८९ |
| नैयायिक मत के अनुसार मोक्षका स्वरूप ----- | १०५ |
| श्रद्धादिकोंके कहनेका प्रयोजन ----- | ११८ |
| भय कब होता है और भयाक लक्षण व उनके सात नाम----- | १३६ |
| आचार्य का स्वरूप ----- | १६४ |
| महाव्रतका स्वरूप ----- | १८२ |
| शुद्ध चारित्र ही निर्जराका कारण है ----- | १९४ |
| ध्यानका स्वरूप ----- | २१६ |
| सिद्धान्त कथन ----- | २३९ |
| पांच भावोंके स्वरूप ----- | २५६ |
| बुद्धिपूर्वक मिथ्यात्वके दृष्टान्त ----- | २८० |
| वेदनीय कर्म सुखका विपक्षी नहीं है ----- | ३०१ |
| सिद्धत्व गुण ----- | ३१० |